an>

Title: Need to issue a commemorative stamp in honour of Jhala Manna, a valiant warrior and associate of Maharana Pratap.

*mo1

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी (चित्तौडगढ़) ः मैं सरकार के संज्ञान में लाना चाहेंगा कि बड़ीसादड़ी के राज राणा झालामन्ना की 7 पीढ़ियों ने 1527 से 1576 के काल खण्ड में मेवाड़ व राजपूताना पर विदेशी हमलावरों से युद्ध करते हुए मैदान में प्राण न्यौछावर किये हैं। झालामान्ना का परिवार हल्वद काठियावड, गुजरात से राज्य छोड़ कर महाराणा रायमल के शासन काल में मेवाड़ आ गया था। उस समय मेवाड़ की जागीर व्यवस्था उत्कÂ◌ाऩ पर थी। मेवाड़ के कई गांवों को झालाओं ने अपने अधिकार में कर मेवाड़ पर आधिपत्य किया था। तब 7 वÂ◌ाऩ तक बड़ीसादड़ी का ठिकाना राजराणा अज्जा को जागीर के रूप में दिया। अज्जा से लेकर आसा तक लगातार छः पीढ़ियाँ मेवाड़ के लिए सर्वस्व समर्पण करती रहीं।

मेवाड़ के भविÂय को प्रताप के हाथों में सुरक्षित समझकर उनके साथ सलाहकार के रूप में झालामन्ना सभी महत्वपूर्ण कार्यों और संघÂ◌ा◌ा◌ें में साथ रहे। 1572 से 1576 तक प्रताप के सैन्य संगठन में अग्रणी भूमिका निभाकर झालामन्ना ने नाकाबंदी करने में कामयाबी हासिल की। उन्हें हर समय युद्ध की अपरिहार्यता का आभास हो जाता था और सदैव आगे होकर मैदान में डट जाते थे।

18 जून, 1576 को हल्दी घाटी के मैदान में मुगल सेना के सामने जब महाराणा प्रताप घिर गये तब झालामन्ना उस समय उनके साथ ही थे। परिस्थिति को समझते उन्हें एक पल भी नहीं लगा और उन्होंने तुरंत महाराणा प्रताप से राजचिन्ह और ध्वज अपने हाथों में ले लिया और महाराणा प्रताप को सुरक्षित युद्ध क्षेत्र से बाहर निकालने में सफल रहे। वे स्वयं दुश्मनों से भिड़ गये और पराक्रम दिखाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इस बलिदान स्वरूप झालामन्ना की जागीर बड़ीसादड़ी को मेवाड़ के राज्य चिन्ह धारण करने व मेवाड़ के महाराणा के बराबर प्रतिÂठापित होने का अधिकार मिला।

अतः मेरा केंद्र सरकार से आग्रह है कि झालामन्ना के बलिदान को ध्यान में रखते हुए यथाशीघ्र उनका डाक टिकट जारी किया जाए। यह उनकी वीरता, सच्ची निÂठा एवं ईमानदारी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।